नोटबुक से झांकते थे गणित के फॉर्मूले

- नवनीत कुमार गुप्ता

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (इंडिया साइंस वायर): असाधारण प्रतिभा के धनी उस युवक की नोटबुक गणित के फॉर्मूलों से भरी रहती थी, जिसे देखकर उस दौर के गणितज्ञ भी चकरा जाते थे। गणित जैसे कठिन एवं गंभीर समझे जाने वाले विषय को सरल बनाकर उसके प्रति लोगों की रुचि पैदा करने का प्रयास करने वाले उस भारतीय गणितज्ञ को पूरी दुनिया सलाम करती थी। बीसवीं सदी के उस असाधारण गणितज्ञ का नाम श्रीनिवास रामानुजन है, जिन्होंने गणित जैसे कठिन एवं गंभीर समझे जाने वाले विषय को आसान बनाकर उसे आम लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने का महत्वपूर्ण काम किया।

भारत जब गुलाम था और इस देश को सपेरों, मदारियों और अंधविश्वासों से भरा माना जाता था, उस समय उस भारतीय गणितज्ञ की प्रतिभा को पूरी दुनिया सलाम कर रही थी। भारत की गणितीय परंपरा के अग्रदूत कहे जाने वाले रामानुजन ने हमें यह बताने का प्रयास किया कि गणित का हमारे जीवन से गहरा और अटूट संबंध है।

चेन्नई से करीब 400 किलोमीटर दूर इरोड में 22 दिसंबर, 1887 को जन्मे रामानुजन का पूरा नाम श्रीनिवास रामानुजन आयंगर था। उनके पिता श्रीनिवास आयंगर एक लेखाकार थे। रामानुजन में बचपन से ही गणितीय प्रतिभा थी, जिसके कारण उन्हें स्कूल के समय में ही कई पुरस्कार मिले। इसी दौरान उन्होंने 'ए सिनाप्सिस ऑफ एलिमेंट्री रिजल्ट्स इन प्योर ऐंड एप्लाइड मैथमेटिक्स' पुस्तक पढ़ी। उन्होंने इस किताब के माध्यम से तीन नोटबुक तैयार कर डालीं। इसके बाद उन्होंने एक छात्रवृत्ति प्राप्त की और कुंभकोणम राजकीय विद्यालय में पढ़ाई करते रहे, लेकिन परीक्षा परिणाम अच्छा न रहने की वजह से उन्हें छात्रवृत्ति छोड़नी पड़ी।

इस तरह विश्वविद्यालय की डिग्री के बिना ही रामानुजन एक अच्छी नौकरी की तलाश में संघर्ष कर रहे थे, पर गणित के प्रति उनका जुनून कम नहीं हुआ और वह अधिकांश समय गणितीय समस्याओं को हल करने में बिताते थे। वह जो कुछ करते, उसे एक नोटबुक में हमेशा लिखते रहते थे। ऐसी कई नोटबुक्स उन्होंने लिख डाली थीं, जो उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण होती थीं।

14 जुलाई, 1909 को रामानुजन का विवाह जानकी देवी से हो गया और पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ती चली गईं।
वर्ष 1910 में भारतीय गणितीय सोसायटी के संस्थापक प्रोफेसर वी. रामास्वामी अय्यर रामानुजन से मिले। रामानुजन की नोटबुक्स देखकर वह हैरान रह गए। उन्होंने समझा कि रामानुजन में गणित की नैसर्गिक प्रतिभा है। फरवरी, 1911 से अक्टूबर, 1911 के दौरान जर्नल ऑफ दि इंडियन मैथमेटिकल सोसायटी में रामानुजन के 50 सवाल और उनके समाधान प्रकाशित हुए थे।

वर्ष 1912 में रामानुजन ने मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में लेखा अनुभाग में लिपिक के रूप में कार्य करना आरंभ किया। इस दौरान रामानुजन की ओर गणित के कई दूसरे विद्वानों का ध्यान भी गया, लेकिन वर्ष 1913 में विख्यात गणितज्ञ जी.एच. हार्डी को लिखा गया रामानुजन वह पत्र उनकी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण पड़ाव बन गया, जिसमें उन्होंने गणितीय समस्यातओं पर विचार किया था।

हार्डी ने अपने मित्र जॉन लिटिलवुड से उन पत्रों के बारे में चर्चा की और फिर उन्होंने रामानुजन को लंदन आमंत्रित कर लिया। 14 अप्रैल, 1914 को रामानुजन लंदन पहुंचे और फिर अगले पांच सालों तक उन्होंने गणितज्ञ जी.एच. हार्डी के साथ कार्य करते हुए गणित की अनेक समस्याओं को हल करने का प्रयास किया। उनके कार्यों के कारण वर्ष 1916 में उन्हें बी.ए. की उपाधि प्रदान की गई। रामानुजन पहले गणितज्ञ थे, जिन्हें रॉयल सोसायटी की प्रतिष्ठित फेलोशिप दी गई। 31 वर्ष की उम्र में रामानुजन इसके फेलो चुने गए थे। इसके बाद तो उन्हें अनेक स्थानों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया और उनके शोध-पत्रों को भी खूब सराहा गया।

वर्ष 1916 में रामानुजन भारत लौट आए। इसी दौरान उनकी सेहत बिगड़ने लगी और लंबी बीमारी के कारण 32 वर्ष की अल्पायु में ही 26 अप्रैल, 1920 को इस महान भारतीय गणितज्ञ का निधन हो गया। इस विलक्षण गणितज्ञ की स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2012 को राष्ट्रीय गणितीय वर्ष के रूप में मनाया था। रामानुजन आर्यभट्ट और भास्कर आदि भारतीय विद्वानों की श्रेणी के गणितज्ञ थे। असल में भारतीयों के लिए रामानुजन गणित के क्षेत्र में विलक्षण प्रतिभा से संपन्न विद्वान थे, जिन्होंने अपने कार्यों के बल पर डिग्री प्राप्त की, न कि डिग्री के बल पर कार्य किया। उनकी विलक्षण प्रतिभा ने समूचे राष्ट्र को उनका आभारी बना दिया है। **(इंडिया साइंस वायर)**